(MAP - I)

1. टिप्पणी =

हर्षवर्धन का सम्राज्य विस्तार

प्र- मानचित्र को दर्शाइए, और विस्तार पूर्वक हर्षवर्धन के सम्राज्य की टिप्पणी लिखिए,

उ०= भूमिका = हर्षवर्धन प्राचीन भारत के महानतम सम्राटों में से एक था वह पुष्यभूति वंश या वर्धन वंश का सबसे शक्तिशाली शासक था उसमें अशोक जैसा धार्मिक उत्साह और समुद्रगुप्त जैसी वीरता एवं कुशलता थी। उसने उत्तरी भारत में फैली हुई अराजकता को समाप्त कर राजनीतिक एकता एवं शांति कायम की हर्ष थानेश्वर राज्य के शासक प्रभाकर वंश का सबसे छोटा पुत्र था। अपने बड़े भाई राज्य वर्धन की मृत्यु के बाद हर्ष 606 ई० में थानेशवर की गद्दी पर बैठा अपनी बहन राज्य श्री के आग्रह पर उसने कन्नौज के राज्य को भी थानेशवर में मिला दिया तथा थानेशवर को हटाकर कन्नौज को अपनी राजधानी बनाया। हर्ष की विजय का वर्णन उसके काल में आने वाले "चीनी यात्री ह्वेनसांग" की पुस्तक C.U. की" तथा उसके दरबारी कवि बाणभट्ट के ग्रंथ हर्ष चरित्र से मि

है हर्ष ने 606 ई० से लेकर 647 ई० तक शासन किया हर्ष ने भिन्न प्रदेशों में राजनीतिक एकता की स्थापना की हर्षवर्धन की विजय निम्नलिखित अनुसार है।

① **मालवा की विजय** = राजगद्दी पर बैठने के पश्चात हर्ष ने अपने सेनापति भण्डी के नेतृत्व में एक सेना मालवा पर आक्रमण के लिए भेजी हर्ष की सेना ने मालवा के शासक देवगुप्त जिसने हर्ष के भाई तथा बहनोई की हत्या की थी को पराजित करके मार डाला तथा मालवा पर अधिकार कर लिया।

② **बंगाल की विजय** = हर्ष ने सबसे पहले बंगाल की तरफ ध्यान दिया बंगाल के शासक शशांक ने हर्षवर्धन के भाई राज्यवर्धन की हत्या करने में मालवा के शासक देवगुप्त की सहायता की थी, हर्ष ने अपने सेनापति भण्डी के नेतृत्व में शशांक के विरुद्ध सेना भेजी हर्ष के आगमन की सूचना मिलते ही शशांक कन्नौज को छोड़कर भाग गया, शशांक की मृत्यु के बाद ही हर्ष बंगाल पर अधिकार स्थापित कर सका था,

③ **पाँच प्रदेशों की विजय** = ह्वेनसांग अपनी पुस्तक "S.V.K." में लिखता है कि हर्षवर्धन एक बड़ी सेना के साथ 6 वर्ष तक युद्ध करता रहा, जब तक वह पंच भारत का स्वामी नहीं बन गया, हर्ष ने इन प्रदेशों को अपने राज्य में शामिल कर लिया, ये 5 प्रदेशों पंजाब, कन्नौज, बंगाल, बिहार उड़ीसा थे, इससे हर्षवर्धन की प्रतिष्ठा चारों

तरफ फैल गई।

(4) वल्लभी की विजय = वल्लभी का राज्य आधुनिक गुजरात में स्थित था। इस राज्य का भौगोलिक दृष्टि से काफी महत्त्व था, क्योंकि ये उत्तर में हर्ष के साम्राज्य और दक्षिण में चालुक्य नरेश पुलकेशिन (II) के साम्राज्य के बीच में पड़ता था। हर्ष इस को जीत कर अपनी दक्षिण की कार्यवाही का आधार बनाना चाहता था। इसलिए हर्ष ने वल्लभी पर आक्रमण कर दिया। उस समय ध्रुवसेन (II) वल्लभी का शासक था। ध्रुवसेन पराजित हुआ। उस ने भाग कर भड़ौच के शासक के पास शरण ली। कुछ समय पश्चात ध्रुवसेन व हर्ष के बीच मित्रता हो गई। हर्ष ने उसके साथ अपनी पुत्री का विवाह कर दिया। इतिहासकारों ने हर्ष के इस कार्य की सराहना की और इसे सफल कूटनीति बताया।

(5) पुलकेसिन II से युद्ध = यह चालुक्य वंश का सबसे शक्तिशाली शासक था। ह्यूनसांग भी उसकी शक्ति की चर्चा करता है। हर्ष की विजय के परिणाम स्वरूप उसकी साम्राज्य की सीमाएं नर्मदा नदी तक पहुंच गई। पुल केसिन भी उत्तर की ओर अपने राज्य का विस्तार करना चाहता था। ऐसी आवश्यकता इस युद्ध में पुलकेसिन II ने हर्षवर्धन को हराकर परमेश्वर की उपाधि धारण की।

(6) कामरूप की विजय = यह विजय राजा भास्कर ने हर्ष की अधीनता को स्वीकार

किया गया, ह्युसांग लिखता है कि ... प्रभाव को ब्रह्मपुत्र घाटी तक फैलाने में सफल रहा, उसने कामरूप को भी अधीन कर लिया, कन्नौज की सभा में भास्कर वर्मा उपहारों सहित उपस्थित था, उसने हर्षवर्धन की अधीनता स्वीकार कर ली,

(7) सिंध की विजय = यह विजय हर्षचरित से ज्ञात होता है कि हर्ष ने सिंध के राजा पर भी युद्ध किया, तथा उसे पराजित करने में सफलता प्राप्त की परन्तु चीनी यात्री सिंध को एक स्वतंत्र राज्य बताता है,

(8) नेपाल और कश्मीर की विजय = इस विषय में हर्ष ने नेपाल और कश्मीर पर विजय प्राप्त की थी ह्युसांग लिखते हैं कि कश्मीर के राजा के पास महात्मा बुद्ध के अवशेष थे तथा कश्मीर नरेश ने भयभीत होकर बुद्ध के दांत हर्षवर्धन को दे दिए, बाद के सुजारचित्रों से भी इस बात की पुष्टि होती है कि हर्ष ने इसी कारण से कश्मीर पर विजय प्राप्त की थी,

(9) गंजम की विजय =

गंजम का प्रदेश महानदी के दक्षिण में बंगाल की खाड़ी के तट पर स्थित था, हर्ष ने 643 ई० के लगभग इस प्रदेश पर आक्रमण किया, तथा इस पर अधिकार कर लिया, यह पूर्वी भारत में हर्ष का दूसरा युद्ध था,

Scanned with CamScanner

⑥ विदेशों के साथ संबंध =

एक विजेता के साथ-साथ हर्ष एक कुशल राजनीतिक भी था, उसने चीन तथा फारस के साथ अच्छा राजनीतिक संबंध स्थापित किए, उसने चीन के सम्राट तइसुंग के पास 641 ई० में अपना एक दूत भेजा, 643 ई० में चीनी दल भी हर्ष के राजनीतिक संबंध थे, हर्ष तथा ईरान का शासक एक-दूसरे को उपहार भेजते रहते थे।

• साम्राज्य विस्तार =

अपनी विजयों के परिणाम स्वरूप हर्ष ने उत्तरी भारत में एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की। उसका साम्राज्य उत्तर में हिमालय से लेकर, दक्षिण में नर्मदा नदी तक, पूर्व में पजम्ब तक फैला हुआ था, उसके साम्राज्य में बंगाल, बिहार, उड़ीसा, मालवा, वल्लभी, कन्नौज, पूर्वी पंजाब तथा थानेश्वर के प्रदेश शामिल थे। सिंध, नेपाल तथा कश्मीर भी उसके राज्य में शामिल थे। इस विशाल साम्राज्य की राजधानी कन्नौज थी। 40 वर्ष तक सफलतापूर्वक राज्य करने के बाद 647 ई० में उत्तरी भारत के महान शासक की मृत्यु हो गई।

निष्कर्ष =

निष्कर्ष तौर पर कहा जा सकता है कि हर्षवर्धन एक विजेता, साम्राज्य निर्माता के साथ-साथ हर्ष एक कुशल शासक प्रबंधक भी था, उसने प्रजा हितकारी तथा कल्याणकारी शासन की नींव रखी, वह एक परिश्रमी तथा कर्तव्य परायण शासक था, वह सम्राट के साथ-साथ साहित्यकार भी था, उसने नागानंद, प्रियदर्शिका, रत्नावली और

Scanned with CamScanner